# ख़ानदाने इजतेहाद - एक तआरूफ़

डॉ० अमानत हुसैन नक़वी, मशहूर व मारूफ़ शख़्सियत डॉ० सै० रज़ा हुसैन नक़वी रम्ज़ के फ़रजन्द और खुद भी एक्यूपंक्चर के कामियाब डॉ० हैं साथ ही अपने वालिद की तरह क़ौमी मसाएल से भी राबेता रखते हैं। आप आल इण्डिया अली कांग्रस लखनऊ के सद्र और नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन के एज़ाज़ी कारकुन हैं क़ौमियात में भरपूर दख़ल रखते हैं। इस मज़मून निगार को ख़ानवाद-ए-दीवान नासिर अली ही के नुमाइन्दे की हैसियत से नहीं बल्कि ख़ानवाद-ए-इदारा-ए-इस्लाह खुंजवा बिहार बल्कि खुद बिहार के नुमाइन्दे की हैसियत से देखकर इस मज़मून के मुन्दरजात को देखना मुनासिब होगा। नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन को मौसूफ़ से बड़ी उम्मीदें हैं।

**इदारा**

ख़ानदाने इज्तेहाद वो ख़ानदान है जिसके चश्मो चराग़ गुज़िश्ता आठ नस्लों से हिन्दुस्तान बल्कि बर्रे सग़ीर की इल्मी, मज़हबी अदबी और मआशेरती फिज़ा को मुतास्सिर करते रहे हैं। यही ख़ानदान था। जिसके मूरिसे आला ने हिन्दुस्तान में इज्तेहाद का संगे बुनियाद रखा ग़ुफ़रानमॉब की दुआ कि मेरे ख़ानदान में क़यामे क़यामत तक इज्तेहाद बाक़ी रहे कम से कम आज की तारीख़ तक हर्फ़ ब हर्फ़ सही होती नज़र आती है। उन्होंने ही हिन्दुस्तान में पहली बार नमाज़ें जुमा व नमाज़े जमाअत का क़याम किया और बर्रे सग़ीर की अज़ादारी को वह शक्ल दी जो आज नज़र आती है।

जैसा कि मेरे अज़ीज़ मौलाना जाबिर जौरासी साहब ने मासिक इस्लाह के मरजइयत नम्बर जून - अगस्त 2012 में मौलाना मोहम्मद अहमद नौगांवी का तवील मज़मून हज़रत ग़ुफ़रानमॉब की तारीफ़ और तौसीफ़ में प्रकाशित किया है जिसमें मौलाना आग़ा रूही साहब के अज्दाद में से अल्लामा किन्तूरी का बयान बहुत ही अहमियत का हामिल है।

''आपकी वेलादत शबे जुमा 1166 हि० में बमुक़ाम नसीराबाद ज़िला रायबरेली में हुई, वरसतुल अम्बिया में है कि जब आप पैदा हुए तो उस मकान में एक नूर सातेअ हुआ। नुजूमुस्समां में है कि कुतुबे उलूमे अक़्लिया फ़ोज़लाए हिन्द मसलन सन्दीले में मुल्ला हैदर अली पिसर मुल्ला हम्दुल्लाह सनदेलवी से और इलाहाबाद में रहकर सैय्यद गुलाम हुसैन दकनी से पढ़ी फिर रायबरेली में मौलवी बाबुल्लाह शागिर्दे अर्शद मुल्ला हम्दुल्लाह मम्दूह से पढ़ीं। और फिर फैज़ाबाद होते हुए लखनऊ तशरीफ़ लाए और नवाब सरफ़राज़ुद्दौला मिर्ज़ा हसन रज़ा खान साहब की इम्दाद से बराहे सिन्ध ज़ियाराते मशाहिदे मुक़द्दसा से मुशर्ररफ होकर कर्बला-ए-मुअल्ला में आक़ा बाक़िर बहबहानी और आक़ा सैय्यद अली तबातबाई और आक़ा सैय्यद महदी मूसवी शहरिस्तानी से और नजफ़े अशरफ़ में हज़रत बहरूल उलूम आक़ा सैय्यद महदी तबातबाई यज़दी से तहसीले उलूमे फ़िक़्ह व हदीस व उसूले फ़िक़्ह वग़ैरह फ़रमाया और 1194 हि० में ज़ियारते मशहदे मुक़द्दस से मुशर्ररफ हुए और वहां जनाब सैय्यद महदी बिन सैय्यद हिदायतुल्लाह अस्फ़हानी की ख़िदमत में रहकर कस्बे इफ़ादात फ़रमाया और उन्हीं बुज़ुर्गों ने इजाज़ा हाए इज्तेहाद दिये और हिन्दुस्तान तशरीफ़ लाए। आपका फ़ज़लो कमाल व उलूवे मरतबत व इज्लाल बयान से बाहर है। फ़क़त यही काफ़ी है कि हिन्दुस्तान में दीने इस्लाम आपके ही वजूदे ज़ीजूद से पाया जाता है। शज़रूल अक़ियान में है कि आयतुल्लाह फ़िल्आलमीनल्लज़ी अहियद्दीने फ़िद्दयारिल हिन्द वतमस्सा आसार आसारूल बदअ वलेजाहेलिय्यतो मौलाना अस्सयिद दिलदार अली अन्नसीराबादी''

अहले इल्म पर क्या जोहला पर भी आपका एहसान है जैसे हज़रत अली अ० की तलवारे आबदार ने सरकशाने अरब को ज़ेर कर दिया और लातो उज्ज़ा व मिनात तीनों को ताक़ हाए हरम से मुंह के बल गिरा दिया ऐसे ही हिन्दुस्तान में अगरचे बराए नाम तशय्यो था मगर कहीं नश्श-ए-भंग नोशी, कहीं अहमद कबीर की गाय, कहीं सद्दू का बकरा, कहीं मीरा जी के गुलगुले, होते थे। यहां भी दिलदार अली रह० की सैफ़े क़लम ने हिन्दुस्तान कि जो कुफ़्रिस्तान था दारूल ईमान बना दिया। आपके इस खुलूस का असर है कि जो जा बजा इस ज़मान-ए-पुर आशोब में फिर कर दुश्मनों में रहकर अरबो

अजम का सफ़रे दूर दराज़ करके उलूमे दीनिया हासिल करके तहते कुब्ब-ए-अबी अब्दिल्लाहिल हुसैन जो दुआ मांगी थी कि मेरी औलाद में ता ज़हूरे क़ाएमे आले मुहम्मद अ० इल्मे दीन क़ाएम रहे सो बेहम्दिल्लाह अब तक है और इन्शाअल्लाह रहेगा और आपका ख़ान्दान 'ख़ान्दाने इज्तेहाद' के नाम से क़ायम हो गया।.........

अख़बारे इमामिया लखनऊ में अल्लामा कन्तूरी का मज़मून छपा है जिसका खुलासा ये है कि कोई शिया जाहिल हो या आलिम इन्कार नहीं कर सकता कि जनाबे ग़ुफ़रानमॉब रह० ने अपनी जान जोखम उठाकर इराक़ से इजाज़ात लाए और रोवसाए अवध को राम करके दीने हक़ की इशाअत में लाखों रूपया खर्च कराके हज़ारहा नहीं तो सदहा उलमा-ए-दीन बनाए। बिला शुब्हा हिन्दुस्तान में इस हमारे हादिये दीन ने वो काम किया जो मदीने में उनके जद्दे नामदार ने। मेरे एक बुज़ुर्ग रसूलपूरी जो आपके सफ़रे इराक़ में रफ़ीक़ थे उनकी चश्मदीद हिकायत जिसको हमारे बुज़ुर्गाने ख़ान्दानी हमेशा विर्दे ज़बान रखे थे, कहते हैं कि जब हमको नजफ़े अशरफ़ में माहे सेयाम की शबे क़द्र हुई तो जनाबे ग़ुफ़रानमॉब ने हमको आमाले शबे क़द्र पढ़ाये और खुद भी पढ़े और अहयाये शबे क़द्र किया और फ़रमाया कि देखो जब एक उमूदे नूर कुब्ब-ए-मुबारक से लेकर आसमान तक नज़र आये तो वही अलामत शबे क़द्र की पूरी है और इस्तेजाबते दुआ का वही वक़्ते मौऊद है अगर मैं सो जाऊं तो मुझे जगा देना और तुम सो जाओगे तो मैं तुमको जगा दुंगा। इत्तेफ़ाक़न जनाबे ग़ुफ़रानमॉब की आंख लग गयी और वो नूर सैय्यद साहब को नज़र आया तो फ़ौरन जनाबे ग़ुफ़रानमॉब को जगा दिया आपने फौरन वुज़ू फ़रमाया और मसरूफ़े दुआ हुए और ये भी दुआ की कि खुदा वन्द!! बेहक़्के साहबे क़ब्र, मेरी औलाद से ता क़यामत इल्मे दीन न जाये यही दुआ ऐसी मुस्तजाब हुई कि जिसका असर क़यामत तक के लिए आपकी औलाद में इन्शाअल्लाह तआला बाक़ी रहेगा और हमारा ईमान इसी पर है। सैय्यद साहब ने दुआ की खुदा वन्दा रसूलपूर में बारापट्टी में सिवाय मेरी पट्टी के और कोई शरीक न रहे जनाबे ग़ुफ़रानमॉब ने एक दो हथ्थड़ उनको मारा कि ऐ कम्बख़्त ये क्या दुआ मांगी सैय्यद साहब बोले तुम ज़मींदारी का मज़ा क्या जानो, मुल्ला आदमी लड़के पढ़ाने का तुमको मज़ा है ज़मींदारी की जड़ पताल में होती है जैसे दूब की जड़।...... इस ख़ान्दाने हिदायत के दुश्मन बदख़्वाह और हमेशा रूसियाह रहेंगे.............. "

इसी ख़ानदान के उलमा थे जिन्होंने हिन्दुस्तानी अवाम को मज़हब और अज़ादारी की तरफ़ मायल किया। इन्हीं का असर-ओ-रूसूख था। कि शायद हिन्दुस्तान में पहली बार नवाबीन ने आलीशान महल तामीर करने की जगह वह इमामबारगाहें और मस्जिदें बनवाईं जिन पर लखनऊ और दीगर मक़ामात को आज भी नाज़ है। इसमें कोई दो राय नहीं कि लखनऊ से उठने वाली 'या हुसैन' की सदा ने तमाम हिन्दुस्तान की फ़िज़ा को मोअत्तर कर दिया। यहां से ताज़ियादारी का रिवाज जो कायम हुआ तो ग्वालियर, कलकत्ता, बिहार और गोलकुण्डा की तरह सैकड़ों जगह के हिन्दु तक ताज़िए रखने लगे। यहां के मदरसों और इल्मी माहौल का असर तमाम हिन्दुस्तान के इल्मी, मज़हबी, अदबी और मआशिरती माहौल पर पड़ा। यहां तहज़ीब की जो नींव डाली उसकी झलक आज भी देखने को मिलती है।

ख़ानदाने ग़ुफ़रानमॉब के अफ़राद की काविशें और कामियाबियां कुर्बानी और ईसार के बिना हासिल नहीं हो सकती थीं। एक नवाब इनके वाज़ में यह कहे हुए शामिल हुए कि अगर शराब के ख़िलाफ़ बोले तो गला काट देना। जान का ख़ौफ़ होता तो शराब के ख़िलाफ बोलने से परहेज़ करते। लेकिन बोले और नतीजा यह हुआ कि नवाब ने शराब नोशी से न सिर्फ तौबा कर ली बल्कि उनकी नज़र में आपकी इज़्ज़त बहुत बढ़ गयी। इसके बाद पुश्त दर पुश्त इसी ख़ानदान के उलमा नवाबीने अवध के मुशीरे ख़ास रहे। यही सरपरस्ती व निगरानी सबब बने लखनऊ के आलीशान इमामबाड़ों और मस्जिदों की तामीर का।

बेग़मात ने इमामे जमाना की छठी मनाना शुरू की तो इन्हीं उलमा ने फ़तवा दे दिया कि यह हराम है। नतीजतन तोप के सामने बांधकर उड़ा देने का हुक्म सादिर हो गया। लेकिन हक की आवाज़ बदस्तूर उठाते रहे। आख़िर हालात ऐसे बने कि नवाब को अपना हुक्म वापस लेना पड़ा। अंग्रेज़ों ने 'फूट डालो और राज करो' वाली अपनी नीति पर अमल करना चाहा तो इन्हीं उलमा के फ़तवों ने अवध के हिन्दुओं और मुसलमानों को जोड़े रखा यहां तक कि 1854–55 में ही अयोध्या में मंदिर मस्जिद झगड़ा पैदा करने की कोशिश की गयी लेकिन खानदान के उलमा ने फ़िरंगीमहल के उलमा के साथ मिलकर उस कोशिश को भी नाकाम कर दिया।

वतन परस्ती ऐसी की अंग्रेज़ों को भी मालूम था कि यही वह दहलीज़ है जहां से जुड़े रहने के सबब अवाम अंग्रेज़ों की मौजूदगी बरदाश्त नहीं कर पा रहे थे। बेगम हज़रत महल ने तलवार संभाली तो उनकी मुख़्तसर सी सिपाह जेहाद का फ़तवा इसी ख़ानदान के उलमा से लेकर निकली। नतीजतन 1857 के गदर में सारे हिन्दुस्तान में अंग्रेज़ों को सबसे भारी

नुक़सान अवध में ही उठाना पड़ा।

आख़िर अंग्रेज़ों की फतेह हुई तो अवध में सबसे भारी कुर्बानी एक बार फिर इसी ख़ानदान के अफ़राद को देनी पड़ी। गुफ़रानमॉब इमामबाड़े से फिरंगीमहल फाटक तक मकानों का सिलसिला था जिसे ख़ानदान के अफ़राद आबाद किए थे। अंग्रज़ों के ज़ुल्म के आगे बहुत से अफ़राद को दरबदर होना पड़ा। नौबत यहां तक आ गयी कि अंग्रेज़ों ने तमाम मकानात गिरा कर उस पर अपनी महारानी की याद में विक्टोरिया स्ट्रीट बना डाली।

इन सब मज़ालिम के बावजूद हक के लिए आवाज़ उठती रही और इत्तेहाद का पैग़ाम दिया जाता रहा। अंग्रेज़ों ने आसफ़ी मस्जिद को घोड़ों का अस्तबल बनाया तो इसी ख़ानदान के उलमा थे जिन्होंने मुकदमा लड़ा ओर आख़िरकार लंदन तक गए जहां उन्हें कामियाबी मिली और मस्जिद में दोबारा नमाज़ क़ायम हुई और साथ टीले वाली मस्जिद को भी छुड़वाकर अहले सुन्नत की नमाज़ भी क़ायम करवाई। आज़ादी की लड़ाई में भी इस ख़ानदान के उलमा मुस्तक़िल कोशिश करते रहे।

अवध पर क़ब्ज़ा जमा लेने के बाद 'फूट डालो और राज करो' की नीति पर ज़ोर शोर से अमल शुरू हो गया। खानदान के उलमा के सामने कठपुतली नामनेहाद उलमा खड़े कर दिए गये। यह सिलसिला आज भी जारी है। यह ऐसे अफ़राद थे जो इल्म भी रखते थे, जाकिरी भी करते थे लेकिन माद्दियत में ऐसे गिरफ़्तार थे कि अंग्रेज़ों की मर्ज़ी के हिसाब से हुक्म सुनाते थे और उनकी हुकूत के इस्तेहकाम के लिए कोंशाँ रहते थे। हुकूमत के इन दलालों ने लखनऊ की इल्मी और मज़हबी फ़िज़ा को हर मुम्किन नुक़सान पंहुचाया और आज भी पंहुचा रहे हैं।

ख़ानदाने इज्तेहाद के उल्मा व मराजे जहां बर्रे सग़ीर में इल्मी क़यादत कर रहे थे वहीं तमाम उलूम व फ़ोनून में तसानीफ़ के हमराह अपने आमाल व किरदार से भी रहबरी का काम अन्जाम देते रहे साथ ही मदरसों, किताबखानों, मस्जिदों, इमामबाड़ों, मुसाफिरखानों, यतीमों के लिए गुस्ल खानों और नेज़ दूसरे फ़लाही कामों को इस तरह अन्जाम दिया कि आज तक उनके और उनके असरात के फ़यूज़ जारी हैं।

## ***आज का ख़ानदाने इज्तेहाद***

हज़रत गुफ़रानमॉब की दुआ कि उनकी "नस्ल में क़यामे क़यामत तक इल्म बाक़ी रहे" में इतनी तासीर थी कि आज आठ, नौ नस्लें गुज़र जाने के बाद भी उस दुआ का असर देखा जा सकता है। आलीजनाब आयतुल्लाह मौलाना काज़िम नक़वी, अल्लाह उन्हें तवील उम्र अता करे, आज हिन्दुस्तान में शियों के सबसे बड़े आलिम और क़ाबिले तकलीद मुजतहिद हैं। नजफे अशरफ़ में सालहा साल तहसीले इल्म में गुज़ारने के बाद वह हिन्दुस्तान वापस आए तो अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी से मुनसलिक हो गये जहां से डीन थियालोजी डिपार्टमेन्ट के ओहदे पर रहते हुए सुबुकदोश हुए। अपने बड़े भाई सैय्यदुल उलमा सैय्यद अली नक़ी नक़वी की तरह मौलाना काज़िम नक़वी को भी तकरीर और तहरीर दोनों पर क़ुदरत हासिल है। उन्होंने कई किताबें तहरीर कीं जिनमें ज़्यादा अभी मंजरे आम पर आना बाक़ी हैं।

ख़ानदान के एक और फ़र्द जिन्हें अल्लाह ने न सिर्फ हिन्दुस्तान बल्कि दुनिया भर में इज़्ज़त से नवाज़ा वह डाक्टर कल्बे सादिक़ नक़वी हैं। हिन्दुस्तान में कौम के अफ़राद की बदहाली डाक्टर कल्बे सादिक़ को चैन से बैठने नहीं देती। इल्म की तरफ़ अवाम को रागिब करना उनका मुस्तक़िल शेवा है। यही सबब है कि उन्होंने युनिटी पब्लिक स्कुल और मदीनतुल उलूम जैसे इदारे बना कर कौम के सुपुर्द कर दिए जहां से मुस्तक़िल तौर पर कौम के बच्चों को इल्म दिया जा रहा है। सेहत के मैदान को भी डाक्टर कल्बे सादिक़ ने अछूता नहीं रहने दिया। लखनऊ को इरा मेडिकल कालिज उनकी काविशों का जीता जागता नमूना है। इसके क़याम के लिए उनकी कोशिशों का अंदाज़ा इस बात से हो सकता है कि उन्होंने सालहा साल दुनिया के गोशे गोशे में घूमकर कालिज के क़्याम के लिए मदद फ़राहम की और आख़िरकार आज इतना बड़ा अस्पताल कायम हो सका। तौहीदुल मुस्लमीन ट्रस्ट दुनिया भर के मोमिनीन से पैसा इकट्ठा करके हिन्दुस्तान में ग़रीबों के इलाज पर खर्च कर रहा है।

मौलाना काज़िम नक़वी के छोटे भाई आलीजनाब आयतुल्लाह मौलाना बाक़िर नक़वी दुबई में मुक़ीम हैं और वहां रहते हुए फरोग़े इल्म और तदरीस की जिम्मादारी निभा रहे हैं। हिन्दुस्तान में कौम के मआशी हालात को सुधारने के लिए आप भी हत्तलइमकान कोशां रहते हैं। मौलाना बाक़िर नक़वी को भी तहरीर और तकरीर दोनों पर क़ुदरत हासिल है। आपकी कई किताबें मंज़रे आम पर आ चुकी हैं और अरबी व उर्दू में बहुत सी किताबें ग़ैर मतबूआ हैं।

सैय्यदुल उलमा के फ़रज़न्द डाक्टर अली मुहम्मद नक़वी गुफ़रानमऑब से सातवीं पुश्त में हैं। उनका शुमार इस वक़्त हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के बड़े दानिश्वरों और मज़हबीस्कालरों में किया जाता है। उनकी बेशुमार किताबें न सिर्फ अंग्रजी और फ़ारसी में बल्कि दुनिया की कई बड़ी ज़बानों में छपीं हैं। अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी के थियोलाजी डिपार्टमेंट

में आप इस वक्त डीन हैं। आपकी आमद ने इस डिपार्टमेन्ट की फआलियात में कई गुना इज़ाफ़ा कर दिया और अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी का यह डिपार्टमेंट सेमिनारों और मज़हबी प्रोग्रामों की सरगरम आमाजगाह बना हुआ है।

ख़ानदाने गुफ़रानमॉब के चश्मों चिराग़ हुज्जतुल इस्लाम वलमुसलिमीन मौलाना कल्बे जवाद साहब बिला शुब्हा पूरे हिन्दुस्तान में शियों के कायद के तौर पर जाने और माने जाते हैं। आप एक अच्छे जाकिर और हक परस्त आलिम हैं जो क़ौमी उमूर से मुताल्लिक मुआमलात में मुसतकिल पेश पेश रहते हैं। इस्लाम दुश्मन अनासिर की कौम में इंतेशार पैदा करने और अंग्रेज़ों की 'बांटों ओर राज करो' की नीति की पैरवी की हर मुम्किन कोशिश के बावजूद आप आज भी हिन्दुस्तान में कायदे मिल्लत के ख़िताब से जाने जाते हैं। आपने तहरीरी मैदान में भी क़दम रखा है और आपकी चन्द किताबें मंज़रे आम पर आईं हैं। आपने अपने वालिद की क़ायम करदा मजलिसे उलमा-ए-हिन्द को मजीद कुव्वत बख़्शी यहां तक कि आपकी दावत पर इस तंजीम से जुड़े उलमा और खुतबा, मुल्क के कोने कोने से इकट्ठा हो जाते हैं। आप न सिर्फ इमामे जुमा मस्जिदे आसफ़ी हैं बल्कि खतीबे मिम्बर गुफ़रानमॉब भी हैं।

क़ाएदे मिल्लत एक अच्छे इन्शा परदाज़ हैं, उनके लिए फ़ाज़िल नबील चौधरी सिब्ते मुहम्मद नक़वी का एक जुम्ला बहुत काफ़ी है कि "लखनऊ" में कल्बे जवाद से गठी उर्दू लिखने वाला कोई नहीं है। आपके कई उनवानों के तहत मुस्तक़िल मज़ामीन कई साल रोज़नामा "राष्ट्रीय सहारा" उर्दू में ऐसे पेज पर छपते रहे जिन्हें पूरी दुनिया में पढ़ा गया और पसन्द किया गया।

मौलाना कल्बे जवाद के बरादरे निस्बती प्रोफ़ेसर मौलाना सै० हुसैन कमालुद्दीन अकबर जावेद जायसी इलाहाबाद यूनिवर्सिटी के शोब-ए-कानून से जुड़े रहने के साथ एक अच्छे ज़ाकिरे मिम्बरे रसूल स. भी हैं। आप अपनी ईमानदारी और साफगोई के लिए जाने जाते हैं जो वक़्फ़ बोर्ड के चेयरमैन बनने के बाद आपके फैसलों से अयाँ है। आपका शुमार शहर इलाहाबाद की बाइज़्ज़त और बाइल्म हस्तियों में होता है।

सैय्यदुल उलमा के नवासे मौलाना तक़ी हैदर नक़वी दिल्ली में मुकीम हैं और वहां के नामवर समाजी कारकुन, सहाफ़ी और अदीब सैय्यद महमूद नक़वी मरहूम के फ़रज़न्द हैं। क़ुम से तालीम हासिल कर वापस आने के बाद से आप दफ़्तरे वली-ए-फक़ीह से वाबस्तगी के सबब हिन्दुस्तान भर के उलमा से जुड़े हैं और मुलक भर के क़ौमी और मज़हबी इजलास में शामिल रहते हैं।

डाक्टर कल्बे सादिक़ के फ़रज़न्द डाक्टर कल्बे सिब्तैन नूरी ने कलम का मैदान संभाल रखा है। आप कई किताबें तहरीर कर चुके हैं और हाल ही में डाक्ट्रेट मुकम्मल करके तदरीस के मैदान में आने की तैयारी में हैं। डाक्टर कल्बे सादिक़ के छोटे साहबज़ादे सैय्यद कल्बे महदी नक़वी उर्फ मुन्तज़िर क़ुर्आन मजीद का हिन्दी में अनुवाद कर रहे हैं जो आख़िरी मराहिल में है और जल्द ही नज़रों के सामने आएगा।

मौलाना कल्बे जवाद के भांजे मौलाना आकिफ़ जैदी क़ुम ईरान में आला दर्जे की दीनी तालीम हासिल करने में मशगूल हैं। आने वाले वक़्त में हिन्दुस्तान की अवाम आपकी सलाहियतों से यकीनन फैज़याब होगी। मौलाना कमालुद्दीन अकबर के फ़रज़न्द और डाक्टर अली मुहम्मद नक़वी के दामाद भी कानून और मज़हब की तालीम हासिल करने के बाद अब तहसीले उलूमे दीनिया के लिए ईरान तशरीफ़ ले गये हैं। आने वाले वक्त में हिन्दुस्तान में खानदान बल्कि दारूल उलूम जायस की विरासत को आगे बढ़ाने की तैयारी कर रहे हैं।

हिन्दुस्तान में ही नहीं पाकिस्तान में भी इस ख़ानदान के उलमा कौमी ख़िदमात अंजाम देने में मशगूल हैं। इनमें सरेफ़ेहरिस्त अफ़राद में अल्लामा नसीर इज्तेहादी के बाद पाकिस्तान के नामवर शायर इक़बाल जायसी के फ़रज़न्द और अल्लामा सै० कल्बे अहमद मानी जायसी के पोते मौलाना हसन ज़फ़र नक़वी साहब का नाम आता है जो पाकिस्तान के मकबूल तरीन उलमा में से हैं। तहरीर और तकरीर दोनों में उनकी ख़िदमात हैं। मौलाना नसीर इज्तेहादी भी पाकिस्तान के एक बड़े आलिम और मुक़र्रिर व ख़तीब थे जो क़ौमी कामों में बढ़ चढ़ कर योगदान दे रहे थे।

## ***सहाफ़्त के मैदान में***

ख़ानदाने गुफ़रानमॉब से जुड़े अफ़राद न सिर्फ मज़हबी इल्म में बल्कि मुख़्तलिफ़ दूसरे शोबों में कामियाबी की मंज़िलों पर गामज़न हैं। हिन्दुस्तान में सहाफ़त के मैदान में यह ख़ानदान खासा सरगरम था और है।

गुफ़रानमॉब के बेटों के आहद से अब तक इस ख़ानदान के उलमा व उदबा ने कई प्रेस क़ायम किये और सौ से ज़्यादा माहनामे, जराएद व अख़बारात निकाले।

सैय्यद हुसैन अफ़सर नक़वी लखनऊ में कौम से ताल्लुक रखने वाले सहाफ़ियों की फेहरिस्त में सबसे बुज़ुर्ग और सीनियर सहाफी हैं। आप न सिर्फ खुद बड़े सहाफ़ी हैं बल्कि लखनऊ में बहुत से सहाफ़ी उन्हें अपना उस्ताद तसलीम करते हैं। मौजूदा वक़्त में आप 'आग अख़्बार के फीचर्स एडीटर हैं। आपकी दोनों बेटियां भी सहाफत के मैदान में हिजाब के साथ तरक़्क़ी की राह पर गामज़न हैं।

शकील हसन शम्सी भी इसी खानदान से वाबस्ता मुल्क के बड़े सहाफियों में से हैं। दुरदर्शन से कई साल तक वाबस्ता रहने के बाद आप कुछ सालों तक उर्दू अख़्बार 'राष्ट्रीय सहारा' से जुड़े रहे। मौजूदा दौर के मसाएल से मुताल्लिक़ आपकी कई किताबें मंज़रे आम पर आ चुकी हैं। हालाते हाज़ेरा पर आपकी अच्छी नज़र है। सहाफत के साथ आ अच्छे शायर और एंकर भी हैं। आपके फ़रज़न्द भी इलेक्ट्रानिक जर्नलिज़्म में क़दम रख चुके हैं।

सैय्यदुल उलमा के नवासे सैयद अज़ीज हैदर पिछले सतरह सालों से अंग्रेज़ी सहाफ़त से जुड़े रहे हैं। कई सालों तक आपके मज़ामीन हिन्दु, हिन्दुस्तान टाईम्स, हिन्दु बिजनेस लाईन, ट्रिब्यून, बिजनेस वर्ल्ड, हाई टाईम, दैनिक जागरण वग़ैरा अख़्बारों और इंद्रमा, इंण्डिया टूडे प्लस, लाईफ वाच और हदीसे दिल जैसी मैग्ज़ीनों में जगह पाते रहे हैं। हाल में आप रियल न्यूज़ इण्टरनेशनल (आर एन आई) न्यूज़ एजेंसी में एसोसिएट एडीटर हैं जिसके ज़रिए आपके मज़ामीन मुल्क भर में अंग्रज़ी, हिन्दी और उर्दु के 80 से ज़्यादा अख़बारों में छपते रहते हैं। आप अब तक नौ किताबें लिख चुके हैं। सैय्यदुल उलमा के कायम कर्दा इदारे 'यादगारे हुसैनी' के आप सेर्केट्री हैं जिसके तहत आपने रद्दे वहाबियत, कातिलाने हुसैन अ. का मज़हब ओर शहीदे इंसानियत जैसी किताबों को प्रकाशित किया। आप आला सहाफ़ती मेयार बरक़रार रखने वाले ईमानदार सहाफ़ी के तौर पर जाने जाते हैं।

सैय्यद मुहम्मद मेहदी (उर्फ़ी) ख़ानदाने इज्तेहाद से जुड़े सहाफ़ियों की फ़ेहरिस्त को मज़ीद पुरनूर बनाते हैं। आप उर्दु सहाफ़त में अपने आला रिर्पोटिंग मेयार के लिए जाने जाते हैं। आप लखनऊ के कई बड़े अख़बारों से वाबस्ता रहे हैं। यही सब्र है कि लखनऊ के सहाफ़ी हल्कों में मक़बूल हैं। फ़िलवक्त आप उर्दु रोज़नामे 'कौमी ख़बर' से वाबस्ता हैं।

हज़रत गुफ़रानमॉब की औलाद में मौलाना सैय्यद हसन नक़वी मरहूम के फ़रज़न्द हुसैन अख़्तर नक़वी का नाम भी फ़रामोश नहीं किया जा सकता जो इलेक्ट्रानिक जर्नलिज्म से गुज़िश्ता क़रीब पन्द्रह सालों से जुड़े हैं। इस दौरान आप टाइम्स नाओ, सहारा, न्यूज़ एक्स, आज तक और कई दूसरे टीवी न्यूज़ चैनलों से जुड़े रहे। जनाब साग़र ख़्यामी मरहूम के तीनों फ़रज़न्द मुम्बई में रहते हुए मीडिया के मुख़्तलिफ़ शोबों से जुड़े हैं और कामियाबी से हमकिनार हैं।

ख़ानदाने गुफ़रानमॉब के अफ़राद सहाफ़त के अलावा भी इल्मी अदबी और मआशरती हलकों में अपनी खिदमात दे रहे हैं। सबका जिक्र कर पाना यहां मुम्किन नहीं।

(पेज नं० ६ का बक़िया..........)

यह सब माद्दी जिस्म के चैन आराम का ख़याल नहीं है तो क्या है ? सफ़र में "क़स्र नमाज़[1] का हुक्म भी सिर्फ़ इसी बुनियाद पर है। ज़ाहिर है कि रूह को सफ़र और पड़ाव के लेहाज़ से कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता, ये सफ़र की माद्दी मेहनत कठिनाई ही है जिस के लेहाज़ से फ़र्ज़ में कमी कर दी गई।

नमाज़ की शर्तो में से कपड़ा भी है। रेशम के कपड़े में नमाज़ पढ़ने की मर्दो के लिए मनाही है। मगर जेहाद की हालत में रेशमी कपड़े की इजाज़त दी गयी है, सिर्फ़ जिस्म की भलाई से। क्योंकि रेशम ज़ख़्म के लिए फायदेमंद है। खुद रोज़े का हुक्म जिसे बहुत ज़्यादा इन्सान के माद्दी पहलू से बेयर वाही बताया जा रहा है इसमें किस तरह आदमी के हालात का ख़्याल किया गया है। अगर कोई बीमार हो और नुक़सान का डर हो तो रोज़े के फ़र्ज़ को हटा दिया गया। इसी तरह बड़े बूढ़ों के लिए जिन्हें रोज़ा आम तौर पर कड़ा हो और सहने वाला न हो या वह औरत जो मॉ बनने वाली हो और बीमार, इन सबको इजाज़त दी गयी है कि वह रोज़े को उन हालात में छोड़ सकते हैं। सफ़र की हालत में भी रोज़ा छोड़ देने को कहा गया है ये ईन्सान की मद्दी ज़िन्दगी का ही लेहाज़ नहीं है?

मालूम हुआ कि ये कहना बिल्कल सही नहीं है कि इस्लाम ने माद्दी ज़िन्दगी का कोई लेहाज़ नहीं किया है और रूहानियत की धुन में माद्दीयत से बहुत हद तक बेपरवाही बरती है, ऐसा हरगिज़ नहीं है बल्कि इस्लाम ने क़दम क़दम पर माद्दी ज़रूरतों का लेहाज़ किया है।

बेशक वह माद्दी चैन आराम और मज़े व खुशी की इतनी आव भगत नहीं कर सकता कि फ़र्ज़ों की बिल्कुल अनदेखी कर दे और इन्सान को बेलगाम छोड़ दे, वह इस ज़िन्दगी को बिल्कुल कुर्बान (Sacrifice) कर देने का न्योता देता है जबकि किसी ऊँचे मक़सद की हिफ़ाज़त और रूहानियत की तरक़्क़ी जान को जोखिम में डालने पर निर्भर हो जैसे 'जेहाद' की मंज़िल। और इस हद तक कठिनाई सहने को ज़रूरी ठहराया है जो शरीयत के हुक्म पर चलने के लिए नेचर से ज़रूरी है।

बेशक उन शरीयत के हुक्मों में छिपा है और फ़ायदे बनते है। **(जारी..............)**